B.M.A College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part-I

classmate
Date 19/11/20
Page 1

Dr Manoj Kumar Sah
Deptt of Political science

राजनीति का उदारवादी दृष्टिकोण

राजनीति की विभिन्न विचारधाराओं में उदारवाद एक प्रमुख विचारधारा है। विगत पाँच शताब्दियों में उदारवाद ने पश्चिमी देशों की राजनीति को प्रभावित किया है। उदारवाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा ही नहीं बल्कि मानव का सम्पूर्ण दर्शन है। 19 वीं शताब्दी में यह विचारधारा चरमोत्कर्ष पर थी प्रथम विश्वयुद्ध के बाद इसे साम्यवाद और फासीवाद की चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

उदारवाद के अनुसार राजनीति सामाजिक जीवन का पक्ष है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अरस्तु ने कहा है - "मनुष्य स्वभाव से ही सामाजिक प्राणी है।" वह व्यक्ति जो समाज में नहीं रहता है, या तो पशु है अथवा देवता " मनुष्य की आवश्यकताएँ अनन्त है। जिन्हें वह अकेले पुरा नहीं कर सकता है। इसे समाज की आवश्यकता पड़ती है।

राजनीति के उदारवादी दृष्टिकोण की व्याख्या निम्नांकित है —

उदारवाद का केन्द्र व्यक्ति :—

उदारवाद मानव व्यक्ति को सर्वोपरि मानता है। प्रत्येक व्यक्ति

आध्यात्मिक समानता में विश्वास रखता है, व्यक्ति अपना स्वामी स्वयं है तथा उसकी इच्छा स्वतंत्र है। प्रारम्भिक उदारवादी व्यक्ति को समाज से अलग मानते थे उनका कहना था कि व्यक्ति साध्य है साधन नहीं

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है: →

मनुष्य स्वभावतः तथा आवश्यकतावश एक सामाजिक प्राणी है। समाज में ही व्यक्ति का विकास हो सकता है। समाज के हित में ही व्यक्ति का हित सन्निहित है।

समाज का आधार प्रतिस्पर्धा है: →

समाज प्रतिस्पर्धा द्वारा अपने-अपने स्वार्थ सिद्धि में लगे व्यक्तियों का जमघट है। इसके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को स्वतंत्र समझौता तथा विनिमय का अधिकार है उदारवाद का आर्थिक पक्ष सबसे तीव्र है। 20वीं शताब्दी में उदारवाद एक नया रूप ग्रहण किया और राज्य का रूप कल्याणकारी हो गया।

व्यक्ति और समाज के हित में सामंजस्य आवश्यक है: →

प्रारम्भिक उदारवादी मुक्त प्रतियोगिता के आधार पर व्यक्ति और समाज में विरोधाभास मानते थे इस कारण अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न हो गई।

Scanned with CamScanner